डॉ. महेश प्रसाद सिन्हा
प्रधानाचार्य सह ऐसोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग, सी.एम.जे.कॉलेज दोनवारीहाट खुटौना,मधुबनी– 847227
Email ID: principalcmjcollege@gmail.com Web:www.cmjcollege.com Mob.No 8544513344

हिन्दी प्रतिष्ठा पार्ट–II के छात्रों के लिए कोर्स मैटेरियल (दिनांक–29 अप्रैल, 2020)

हालावाद या प्रेम और मस्ती का काव्य

छायावाद के बाद और प्रगतिवाद के पूर्व की कविताओं को 'हालावाद' अथवा 'प्रेम और मस्ती' का काव्य कहा गया। इसके संबंध में डॉ0 नगेन्द्र न कहा कि, ''वैयक्तिक कविता छायावाद की अनुजा और प्रगतिवाद की अग्रजा है, जिसने प्रगतिवाद के लिए एक मार्ग प्रषस्त किया। यह वैयक्तिक कविता आदर्षवादी और भौतिकवादी, दक्षिण और वामपक्षीय विचारधाराओं के बीच का एक क्षेत्र है।'' इसे छायावाद के समकालीन काव्य के रूप में भी देखा जा सकता है। इस काव्य में 'उमर खैयाम' की रुबाइयों के अनुवाद, चरम व्यक्तिवाद और हृदय रस से अंकुरित प्रेम और मस्ती सोता के रूप में फूट पड़ा। इस बदलाव के कारण दुःख और सुख दोनों में जीवन और प्रेम का अल्हड़ मादक स्वरूप छलकने लगा, जिसके कारण इसे छायावाद से अलग करके देखा गया। काव्य में इसी बदलाव को 'हालावाद' या 'प्रेम और मस्ती का काव्य' कहा गया। हालावाद के प्रवर्तक हरिवंष राय बच्चन हैं। इनकी पहचान उनकी कृति 'मधुषाला' से होती है। हालावाद की कविता उस युग में बेहद लोकप्रिय हुई तथा गीत के रूप में इसका व्यापक प्रचार हुआ। इस कविता धारा के प्रमुख कवियों में हरिवंषराय बच्चन, भगवतीचरण वर्मा, नरेन्द्र षर्मा और रामेष्वर षुक्ल 'अंचल' आदि हैं।

हरिवंशराय बच्चन (1907–2003) :– मस्ती और अल्हड़पन से मधुगीत गाने वाले प्रसिद्ध कवि हरिवंषराय बच्चन का पहला परिचय 'उमर खैयाम' की रुबाइयों के अनुवाद से हुआ। यह अनुवाद षाब्दिक न होकर भावानुवाद था, जिसमें गीत जाम की तरह छलक रहे थे। अपने सीधे सरल षब्दों को कविता में पिरोकर उन्होंने साहित्य रसिकों को 'काव्य रस' में मदिरा घोलकर साहित्य जगत पर अपनी अलग और अमिट छाप छोड़ी। इनकी सर्वाधिक चर्चित रचना 'मधुषाला' और 'मधुबाला' है। वे इलाहाबाद विष्वविद्यालय में अंग्रेजी के प्राध्यापक रहे और फिर केन्द्रीय सरकार के विदेष विभाग में कार्य किये। इनकी प्रमुख रचनायें हैं– मधुषाला, मधुबाला, मधुकलष, निषा निमंत्रण, एकांत संगीत, आकुल अंतर, सतरंगिनी, बंगाल का अकाल, सूत की माला, मिलन यामिनी, आरती और अंगारे, बुद्ध और नाचघर, त्रिभंगिमा, दो चट्टाने आदि। इनकी रचना में कहीं मस्ती, कहीं विषाद और कहीं निराषा का स्वर मुखरित है। अपनी सरल, सुगम और गीतिमय रचना के लिए वे बेहद लोकप्रिय हुए। किन्तु उनके काव्य में महादेवी वर्मा की तरह प्रायः एक ही तरह के भाव दिखलायी पड़ते हैं और यही उनकी सीमा भी है। बावजूद इसके इन्हें छायावादी युग के स्वच्छंद कवियों में विषेष स्थान प्राप्त है।

'मधुषाला' की कविताएं सीधे मन के भीतर उतरती है और बाहर नषा–सा छा जाता है। इस काव्य संग्रह का 68वां संस्करण प्रकाषित हो चुका है। इससे उसके महत्त्व का अंदाजा लगाया जा सकता है। उदाहरणस्वरूप पेष है मधुषाला से चुनिंदा रूबाइयां–

जलतरंग बजता, जब चुबन करता प्याले को प्याला
वीणा झंकृत होती चलती जब रुनझुन साकीबाला।

X X X

डांट–डपट मधुविक्रेता की ध्वनित पखावज करती है
मधुरब से मधु की मादकता और बढ़ाती मधुषाला।

X X X

इस उधेड़–बुन में ही मेरा सारा जीवन बबीत गया
मैं मदिरालय के अंदर या मेरे अंदर मधुषाला।

'दो चट्टाने' नामक काव्य कृति में 1963–64 की कविताएं संकलित हैं। इसका नामकरण प्रतीकात्मक है। इन कविताओं तक आते–आते हरिवंषराय बच्चन की मधुषाला का खुमार उतरा हुआ लगता है। इस संकलन की कविताएं 'मधुषाला' से हटकर जीवन की विविधताओं और जीवन संघर्ष के घात–प्रतिघातों से युक्त है। अनुभूति की प्रधानता और ओज सभी कविताओं में देखने को मिलती हैं। इस संकलन का केन्द्रीय महत्त्व इस बात में है कि, 'मनुष्य का जीवन अतीत और वर्तमान के बिना अधूरा और अपूर्ण है। क्योंकि अतीत उसे संबल प्रदान करता है और वर्तमान उसे गतिषील बनाता है। अतीत और वर्तमान के कलात्मक समन्वय से भविष्य का मार्ग प्रषस्त होता है।' उन्होंने लिखा है–

डद्घाटन नए से पुराने का होता है।
सृजन पुराने का नए से होता है।
एहि क्रम कर अथ–इति कहूँ नाहीं।

<u>भगवतीचरण वर्मा</u> (1903–1981) :– भगवतीचरण वर्मा हालावाद के प्रमुख कवि हैं। उन्होंने भी हरिवंषराय बच्चन की तरह छायावादी रहस्यात्मकता को छोड़कर प्रेम, मस्ती एवं उल्लास से भरे दिवानेपन के साथ प्रेम और यौवन का चित्रण किया। इनकी रचनाओं में छायावादी मस्ती और प्रगतिवादी विषेषता पायी जाती है। इनका मुख्य काव्य संग्रह है – मधुकरण और प्रेमसंगीत। कवि रूप से अधिक उनकी प्रसिद्धि उपन्यासकार रूप में हुई। उन्होंने अपने गीतों में किसी प्रकार की कृत्रिम नैतिकता का बंधन स्वीकार नहीं किया। उदाहरणस्वरूप एक चित्र है–

हम दीवानों की क्या हस्ती आज यहां कल वहां चले
मस्ती का आलम साथ चला हम धूल उड़ाते जहां चले।

बाद चलकर 'मानव' संग्रह में उनके दीवानेपन और मादक स्वप्नों का खुमार उतरा हुआ दिखलायी पड़ता है। 'मानव' में उन्होंने षोषित वर्ग के प्रति करुणामयी सहानुभूति प्रकट की है। पेष है एक चित्र–

चरमर–चरमर चूँ चरर, जा रही चली भैंसा गाड़ी।
उस ओर क्षितिज के कुछ आगे, कुछ पाँच कोस की दूरी पर।
भू की छाती पर फोड़ों से है, उठे हुए कुछ कच्चे घर।
नर पषु बनकर पिस रहे जहां, नारियां जन रही हैं गुलाम।
पैदा होना फिर मर जाना, बस इन लोगों का यही काम।

<u>नरेन्द्र शर्मा</u> (1913–89) :– पंडित नरेन्द्र षर्मा कवि, लेखक तथा गीतकार थे। उनकी रचनाओं में प्रेम की व्याकुल अभिव्यक्ति कहीं कहीं वासनात्मक भी हो गयी है। प्रकृति सौंदर्य के चित्रण में इनका मन खूब रमा है। इनके गीतों में यथार्थवादी दृष्टिकोण की प्रधानता है, किन्तु इनमें प्रगतिवादी विचारधारा और राष्ट्रप्रेम की संवेदना भी प्रवाहित है। उन्होंने खुद को 'मानवीय दुर्बलताओं का कवि' कहा है। 'षूल–फूल' और 'कर्णफूल' इनकी प्रारंभिक रचनाएं

हैं, जिनमें अबाध रूप से प्रेम की अभिव्यक्ति हुई है। 'पलाषवन' में प्रेम की पीड़ा और प्रकृति–चित्रण में कवि अपने ही हृदय की प्रतिच्छाया देखता है। एक चित्र है–

लो डाल–डाल से उठी लपट, लो डाल–डाल फूले पलाष।
यह है वसंत की आग लगा दे, आग जिसे छू ले पलाष।

नरेन्द्र षर्मा की कविताओं में मानसिक अन्तर्द्वन्द्व के अलावे यथार्थवादी दृष्टिकोण की अभिव्यक्ति भी मिलती है। इसे हम प्रगतिवाद का प्रभाव कह सकते हैं। प्रस्तुत है कुछ चित्र–

उजड़ रही अनगिनत बस्तियां मन मेरी ही बस्ती क्या ?

X X X

एक–दूसरे का अभिनव कर रचने एक नये भव को ।
है संघर्ष निरत मानव, जब फूंक जगत गत वैभव को।

<u>रामेश्वर शुक्ल अंचल</u> (1915–1995) :– रामेष्वर षुक्ल अंचल का जन्म 01 मई, 1915 को ग्राम किषनपुर, जिला फतेहपुर, उत्तर प्रदेष में हुआ था और उनका देहावसान 12 अक्टुबर, 1995 में हुआ। वे जबलपुर विष्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के विभागाध्यक्ष थे। वे छायावाद युग के उतरार्द्ध के कवि हैं। इनकी आरंभिक कविताओं में वासनामय प्रेम का विस्फोट मिलता है, वहीं बाद की कविताओं में मार्क्सवादी और प्रगतिषील विचारधाराओं से युक्त कविताएं मिलती हैं। इनकी भाषा में नये विषेषण और नये उपमान प्रयुक्त हुए हैं। इनका प्रमुख कविता संग्रह है– मधुलिका, अपराजिता, किरण बेला, वर्षांत के बादल और विराम चिन्ह। इन्होंने उपन्यास, निबंध तथा हिन्दी साहित्य का अनुषीलन आदि ग्रंथ भी लिखे।

लोगों की मान्यता है कि अंचल की दृष्टि में नारी का महत्त्व महज उपभोग और रतिसुख के लिए है, किन्तु मुझे ऐसा लगता है कि यह युगीन वासनायुक्त मिजाज को दर्षाता है। पेष है रतिसुख का एक चित्र है–

एक पल के ही दरस में जग उठी तृष्णा अधर में,
जल रहा परितप्त अंगों में पिपासाकुल पुजारी।

यहां भोग–विलास का पुजारी कौन है? स्वयं कवि या उस युग के सामंती मिजाज के लोग? यह अपने आप में षोध का विषय है। आष्चर्य की बात है कि अंचल जी की बाद की कविताएं प्रगतिषील विचारधाराओं से प्रेरित है। वही कवि किसान–मजदूरों के दुःख की बात करता है। देखिए एक चित्र–

देखो मुट्ठी भर दाने को तड़प रही कृषकों की काया,
कब से सुप्त पड़ी खेतों में जागों इन्कलाब घिर आया।

इस प्रकार हम देखते हैं कि छायावाद युग में जिन नये मानव–मूल्यों की स्थापना हुई, जिन उदात्त भाव–भूमि पर गर्जन–तर्जन हुआ, जिन अर्थछवियों में नारी–मूल्यों, समरसता और राष्ट्रीयता की रचना हुई उसका दायरा 'मधुषाला' और वासना तक पहुंचकर संकीर्णतर हो गया। इस तरह के नैतिक मूल्य यूरोप की संस्कृति में मौजूद है, भारतीय संस्कृति में आज भी इस तरह के भावों को लोग स्वीकृत नहीं कर पा रहे हैं। छायावादी युग के उत्कर्ष और ह्रास की प्रक्रिया हिन्दी कविता के विकास क्रम की एक कड़ी है, जिसने सर्वथा एक नये युग को जन्म दिया।

दिनांक : 28 / 04 / 2020 **– डॉ. महेश प्रसाद सिन्हा**